ऋषिकेश। इंटर कॉलेज के प्रिंसीपल रामनरेश मिश्र को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.आरती।

सिरसा। उज्ज्वल भारत के लिए 'युवा जागृति अभियान' के उद्घाटन समारोह में मंचासीन हैं युथ कांग्रेस के उपाध्यक्ष आनंदवीर सिंह, ब्र.कु.बिन्दू एवं ब्र.कु.वीनू।

सीतापुर। स्वास्थ्य जागरूकता मेडिकल कैंप में प्रोजेक्ट मैनेजर सरोज वर्मा एवं फिजिशियन डॉ.जितेन्द्र कुमार सिंह को गुलदस्ता भेंट कर अभिवादन करते हुए ब्र.कु.योगेश्वरी।

टोहना, जींद। 'पर्सनैलेटी डेवलपमेंट व हेल्थ हैपीनेस' सेमिनार में ब्र.कु.जमीला को सम्मानित करते हुए भारत विकास परिषद के अध्यक्ष एवं व्यापार मण्डल के प्रधान सुभाष गोयल।

वलसाड। 'व्यसन मुक्ति चित्र प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए स्टेशन मैनेजर शर्माजी, ब्र.कु.रंजन बहन, ब्र.कु.रोहित तथा अन्य।

मैसूर। 'अमृत महोत्सव' कार्यक्रम में मंचासीन हैं स्वामी चंद्रशेखर शिवाचार्य, क्षेत्रिए संचालिका ब्र.कु.लक्ष्मी दीदी, ब्र.कु.शारदा।

चरित्र जीवन की पूँजी है

चरित्रवान मनुष्य का मूल्य कोहिनूर हीरे से कम नहीं है। जहां चरित्र है, वहां प्रकाश है और जहां अनैतिकता है वहां अन्धकार है, विनाश है। विचारकों ने कहा है कि कोई देश आर्थिक दृष्टि से भले ही गरीब हो, परंतु यदि वहां के मनुष्यों के पास चरित्र रुपी धन है तो वह देश शीघ्र ही महान् राष्ट्र बन जायेगा। और यदि किसी धनवान राष्ट्र के लोग चरित्रहीन है तो वह राष्ट्र पतन को प्राप्त होगा। वास्तव में चरित्र ही राष्ट्र की सच्ची निधि है। चरित्रहीन व्यक्ति यदि बलवान हो तो वह हिंसात्मक वृत्ति अपनाकर अपना व दूसरों का अहित कर बैठता है। और चरित्रहीन व्यक्ति यदि विद्वान हो, तो वह विद्या व विद्या की देवी सरस्वती को भी अपमानित करता है।

'चरित्र' शब्द के अंत में इत्र शब्द इसके महत्व पर प्रकाश डालता है। चरित्र ऐसा सच्चा इत्र है कि जहां भी यह होगा, चारों ओर सदगुणों की सुवास प्रवाहित होगी, मानवता का मस्तक इतना होगा कि आंका नहीं जा सकेगा। जिस समाज में थोड़ें भी लोग चरित्रवान व्यक्ति इस समाज की नींव बनकर रहेंगे, जिसपर समाज की इमारत सुदृढ़ता से खड़ी रहेगी। किसी परिवार में यदि एक भी चरित्रवान व्यक्ति होगा तो वह परिवार भद्र परिवार माना जायेगा। उस एक व्यक्ति की श्रेष्ठ प्रेरणाओं से जन समूह सच्चरित्रता की प्रेरणा प्राप्त करता रहेगा। चरित्रवान व्यक्ति ही श्रेष्ठ व्यक्तित्व वाला व्यक्ति माना जाता है। यदि किसी नर-नारी को बाह्य अथवा शारीरिक सुन्दरता तो प्राप्त हो परन्तु उसमें सच्चरित्र की सुन्दरता का अभाव हो तो उसका व्यक्तित्व कदापि आकर्षक नहीं होगा। एक बलशाली राजा यदि श्रेष्ठ चरित्र से सूसज्जित न हो तो वह महान् सम्राट की उपाधि से अलंकृत नहीं होगा। इस प्रकार यदि हमें अपने व्यक्तित्व का विकास करना है तो हमें अपने चरित्र का उत्थान करना होगा। मान लो एक व्यक्ति अति सुन्दर है, वह बुद्धिमान भी है, परन्तु वह बात-बात में आग बबूला हो उठता है अथवा वह अहंकारी है तो समाज उसके श्रेष्ठ व्यक्तित्व को स्वीकार नहीं करेगा।

वर्तमान समय मनुष्य का चरित्र तीव्रता से पतन की ओर अग्रसर है। विकास के नाम पर चरित्र, पतन की कहानी बनती जा रही है। विज्ञान व शिक्षा का विकास चरमोत्कर्ष पर है परन्तु मानवता का पतन भी अंतिम सीढ़ी उतरने को है। 'चरित्रवान' व्यक्ति का आज मजाक उड़ाया जाता है। फैशन ने मनुष्य को सर्व मर्यादायें भुलाकर उसे सतत् दैहिक क्रीड़ा करने को प्ररित किया है। दिनोंदिन बढ़ते असाध्य रोग मानव के चरित्र पतन के ही तो उदाहरण हैं। काम-वासना की बढ़ती हुई आंधी ने मनुष्य के मन को विकृत करके बेचैन और अशांत कर दिया है। क्रोध व अहंकार ने बुद्धिमानों की बुद्धि पर पर्दा डाल दिया है।

दिनोंदिन मानव में पारस्परिक विशुद्ध स्नेह, सहिष्णुता, परोपकार की भावना, सुख देने की भावना व त्याग की भावना क्षीण होती जा रही है और वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष, बदले की भावना और नीचे गिराने की इच्छा, उग्र रूप धारण करती जा रही है। सभ्य मनुष्य ने चरित्र की होली जला दी है। धन ही उसके जीवन का श्रृंगार बन चुका है। शिक्षित वर्ग 'चरित्र' को प्राचीन परम्परा मानकर पाश्चात्य सभ्यता की ओर झुकने में अपना गौरव समझता है। चरित्र का जैसा अभाव आज के समाज में है, वैसा पहले कभी भी देखने में नहीं आया।

आदिकाल का चरित्र:- एक समय था, भारत स्वर्णयुग था। यहां धन की सम्पन्नता भी अत्याधिक थी तो मानव भी सम्पूर्ण चरित्रवान देवता था। सद्गुणों से युक्त उन देवी देवताओं का जीवन इतना महान् था कि आज उन्हें लोग पूज रहे हैं। उनके जीवन में दिव्य गुणों का इत्र विद्यमान था। फलस्वरूप प्रकृति भी सुगंधित व मर्यादित थी। जबकि आज मानव की चरित्रहीनता से प्रेरित प्रकृति भी उदण्ड हो गई है। सुखदाई प्रकृति कष्टदाई बनती जा रही है। आदि के दो युगों तक मानव चरित्र से पूर्णतया विकसित रहा। उनमें पूर्ण अहिंसा थी, साथ-साथ पवित्रता का इतना बल था कि युद्ध ही नहीं होते थे। न कोई किसी को दु:ख देता था और न कोई किसी का बुरा चाहता था। मन भी शुद्ध व निरोगी थे और तन भी

शेष पृष्ठ 11 पर

भगवान को प्रिय कौन लगते हैं

भगवान प्रिय आत्मा के लक्षण बताते हुए कहते हैं कि जो किसी से द्वेष नहीं करता और सर्व के प्रति मित्रता भाव रख कृपालू है, वह भगवान को प्रिय है। जो ममत्व बुद्धि और अहंकार रहित है, वह आत्मा भगवान को प्रिय है। जो सदा संतुष्ट, दृढ़ और संयमी है वह भगवान को अति प्रिय है। जो समर्पण बुद्धि है और कर्मयोगी है, वह भगवान को प्रिय है। जो न स्वयं क्रोध करता है और न किसी को क्रोधित करता है वह प्रिय है। जो ईर्ष्या, भय और विषाद इन दुर्गणों से अलिप्त है, वही भगवान को अति प्रिय है। जो निरपेक्ष, पवित्र और दृढ़ सकंल्पधारी है, वह भगवान को अति प्रिय है। पुरुषार्थ में दृढ़ सकंल्पधारी तो बनना ही है, पवित्र मन की भावनाओं को रखना ही है। जो न अति हर्ष और न शोक, न कभी कोई बात में ईच्छा रखता है, वह भगवान को अति प्रिय है। जो कर्म में शुभ और अशुभ के त्यागी हैं, वो भगवान को अति प्रिय है। जो शत्रु, मित्र, मान, अपमान, सुख-दु:ख, निंदा-स्तुति में समान एवं क्षमाशील है, वह भगवान को अति प्रिय है। जो अनासक्त मितभाषी और दूषित संगति से सदैव मुक्त है, वह भगवान को अति प्रिय है। जो धर्ममय अमृत पथ का श्रद्धा से अनुसरण करते हैं वह भगवान को अति प्रिय है।

इतने लक्षण वाले व्यक्ति भगवान को अति प्रिय लगते हैं। इसलिए कर्मयोगी माना इन लक्षणों को जितना हो सके, उतना अपने जीवन में विकसित करते जाए और अपने आपको भगवान का प्रिय बनाते चले। इस अध्याय में भगवान ने साकार भक्ति से निराकार भक्ति को श्रेष्ठ बताया। फिर भगवान की प्रिय आत्मा के लक्षण बताए हैं। उन लक्षणों के आधार पर कैसे हर संघर्ष में विजयी बनना है। इसकी प्रेरणा दी। इस प्रकार बारहवें अध्याय में परमात्मा ने अपने प्रिय अर्जुन के प्रश्नों के उत्तर दिये।

अब अपने मन को बाह्य सभी बातों से समेट लें। योगाभ्यास के लिए अपने मन को शुद्ध संकल्प देते जायेंगे, दृढ़तापूर्वक बैठें, जितनी शारीरिक एकाग्रता को हम बना सकते हैं,

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

उतनी मन की एकाग्रता को ले आना सहज और स्वाभाविक होगा। इसलिए दृढ़ता पूर्वक अभ्यास करें। साथ ही साथ मन को परमात्मा की स्मृति में ले चलते हैं। अपने मन को शुद्ध संकल्प देते चलें। अंतर्चक्षु, धीरे-धीरे खुलता जा रहा है। परमात्मा के दिव्य स्वरूप को हम सभी ने जान लिया समझ लिया है। अब उस अंतर्चक्षु के सामने परमात्मा के दिव्य स्वरूप पर, हम अपने मन और बुद्धि को एकाग्र करेंगे।

अपने मन को.. शुद्ध संकल्पों में स्थित करें.. उसी भाव को जागृत करें.. कि मैं देह नहीं... एक शुद्ध श्रेष्ठ आत्मा हूँ.. परमात्मा की.. अति प्रिय संतान हूँ.. अन्तर्चक्षु से.. स्वयं के दिव्य स्वरूप को... भ्रकुटी के मध्य में देखें... मैं... अति सूक्ष्म... दिव्य... प्रकाशपुंज हूँ... धीरे-धीरे... अपने मन और बुद्धि को... पंच तत्व के देह से... ऊपर उठाते जायें... पंच तत्व के देह का बंधन... मुझ आत्मा को खींच नहीं सकता है... पर मैं अपने मन और बुद्धि... को ले चलती हूँ... आध्यात्मिक पुरुषार्थ के पथ पर... चलते हैं एक यात्रा पर... परमधाम की ओर... पंचतत्व की दुनिया से दूर... देह और देह के सम्बन्धों से भी... मन को मुक्त करते हुए... सूर्य, तारागण से भी पार... परमधाम में... जहाँ चारों ओर... दिव्य प्रकाश फैला हुआ है... अन्तर्चक्षु से स्वयं को उस दिव्य लोक में... अव्यक्त रूप में.... देख रही हूँ... जहाँ मैं आत्मा... सम्पूर्ण... सतोगुणी स्वरूप में... परमात्मा के समान प्रकृति को धारण की हुई... मेरे पिता परमात्मा... दिव्य प्रकाशपुंज हैं... अन्तर्चक्षु से मैं... उस असीम दिव्य स्वरूप... को निहार रही हूँ... हजारों सूर्य से तेजोमय स्वरूप... शीतल प्रवाह... नित्य प्रवाहित हो रहा है... सर्व शक्तिमान... सर्वोच्च शक्ति... निर्माण और पवित्र स्वरूप... कितना असीम और दिव्य... रूप मैं अपने अन्तर्चक्षु से देख रही हूँ... ज्ञानयुक्त बुद्धि से.... आज मैंने परमात्मा के... इस असीम ऐश्वर्य... सौंदर्य को देखा है... जाना है... समझा है... और मेरा अज्ञान का अंधकार... दूर हो गया है... अब तक... मैंने कितने प्रयत्न किए... उसको जानने और समझने के लिए... लेकिन आज मेरे सामने... ये दिव्य स्वरूप... अपने असीम सौंदर्य से युक्त... कुछ क्षण के लिए.... मन को इस दिव्य स्वरूप में.... एकाग्र करते हैं... और परमात्मा के... असीम प्यार में... समाते जाते हैं... अनन्य भाव से... उस परमात्मा में... श्रद्धा के साथ... मन और बुद्धि को... समर्पण करते हैं... और सर्व सम्बन्धों का सुख.... उस परमात्मा के.... सानिध्य में.... रहते हुए... अनुभव करते हैं.... भगवान.... मेरे मात-पिता है.... परमशिक्षक हैं.... परमसत्गुरु हैं... जिसके वरदानों से..... मेरा जीवन... धन्य-धन्य हो रहा है... वही मेरे खुदा दोस्त है... जीवन साथी है... मेरे प्रियत्तम है... भगवान मेरे साथी है... सर्व सम्बन्धों के... सुख का अनुभव.... अपने मन और बुद्धि में समाते हुए..... धीरे-धीरे... मैं अपने मन और बुद्धि को वापिस.... इस पंच तत्व की दुनिया की ओर..... शरीर में.....भ्रकुटी के मध्य स्थित करती हूँ..... और शरीर में.... सर्व इंद्रियों में.... रोम-रोम में... उस परमात्म शक्ति को... प्रवाहित करती हूँ... ओम् शांति... शांति..... शांति.... शांति...। - क्रमश: